आरती कुंजबिहारी कीुंजबिहारी की

आरती कुंजबिहारी कीुंजबिहारी की
आरती कुंजबिहारी कीुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

आरती कुंजबिहारी कीुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

गले में बैजंती मालांती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला ।ाला ।
श्रवण में कुण्डल झलकालाण्डल झलकाला,
नंद केआनंद नंदलाला ।ं
दलाला ।
गगन सम अंग कांति काली
काली,
राधिका चमक रही आली ।
का चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमाली
नमाली
भ्रमर सी अलक,
कस्तूरी तिलकलक,
चंद्र सी झलकंद्र सी झलक,
ललित छवि श्यामा प्यारी कीत छवि श्यामा प्यारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ुंजबिहारी की...॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसैट बिलसै,
देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै ।रसै ।
बजे मुरचंगंग,
मधुर मिरदंगं
ग,
ग्वालिन संगं
ग,

अतुल रति गोप कुमारी कीमारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ुंजबिहारी की...॥

जहां ते प्रकट भई गंगा
ा,
सकल मन हारिणि श्री गंगा ।
ा ।
स्मरन ते होत मोह भंगाा
बसी शिव सीस सीस,
जटा केबीचीच,
हरै अघ कीच,
चरन छवि श्रीबनवारी की
ारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारीुंजबिहारी की...॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनूवल तट रेनू,
बज रही वृंदावन बेनू ।ेनू ।
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू
ोपि ग्वाल धेनू
हंसत मृदु मंदं
द,
चांदनी चंदं
द,
कटत भव फंदं
द,
टेर सुन दीन दुखारी की
खारी की,
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ुंजबिहारी की...॥

आरती कुंजबिहारी कीुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

आरती कुंजबिहारी कीुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥